Total No. of Printed Pages — 4

GENERAL HINDI
सामान्य हिन्दी

Full Marks : 100 | **Time : 3 Hours**
पूर्णांक : 100 | **समय : 3 घण्टे**

निर्देश

(1) सभी प्रश्नों के उत्तर लिखना अनिवार्य है।

(2) प्रश्नों के अंक दाईं ओर दिए गए हैं।

(3) परीक्षार्थी यथासम्भव अपने शब्दों में सटीक उत्तर लिखें।

1. निम्नलिखित विषयों में से किसी **एक** विषय पर निबंध लिखिए : 30×1=30

(i) भारत में बेरोजगारी की समस्या

(ii) संचार क्रांति का महत्व

(iii) विज्ञान वरदान है या अभिशाप?

(iv) जीवन में योग का महत्व

(v) वैश्विक शांति की चुनौतियाँ

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर निर्देशानुसार लिखिए :

(क) किन्हीं **पाँच** शब्दों के दो-दो पर्यायवाची लिखिए। 2×5=10

(i) अग्नि

(ii) असुर

(iii) गंगा

(iv) चन्द्र

(v) जल

(vi) पर्वत

(vii) पुत्र

(viii) वृक्ष

(ख) किन्हीं **पाँच** शब्दों के विलोम शब्द लिखिए। 2×5=10

(i) अवनति

(ii) अग्रज

(iii) उदार

(iv) उपयोग

(v) कुरूप

(vi) गगन

(vii) घात

(viii) जन्म

(ग) किन्हीं **पाँच** मुहावरों का अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग कीजिए। 2×5=10

(i) अन्धा बनाना

(ii) अक्ल पर पत्थर पड़ना

(iii) अन्न-जल उठना

(iv) अपने पैरों पर खड़ा होना

(v) आस्तीन का साँप

(vi) ईंट से ईंट बजाना

(vii) उड़ती चिड़िया पहचानना

(viii) एक आँख से देखना

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर निर्देशानुसार लिखिए :

(क) किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर लिखिए। 5×3=15

(i) संज्ञा को परिभाषित करते हुए संज्ञा के भेद बताइए।

(ii) सर्वनाम को परिभाषित करते हुए सर्वनाम के भेद बताइए।

(iii) क्रिया को परिभाषित करते हुए क्रिया के भेद बताइए।

(iv) वाक्य की परिभाषा देते हुए रचना की दृष्टि से वाक्य के भेद बताइए।

(v) विशेषण की परिभाषा देते हुए उसके भेद बताइए।

(ख) किन्हीं **पाँच** अशुद्ध वाक्यों को शुद्ध कीजिए। 2×5=10

(i) श्रीकृष्ण के अनेकों नाम हैं।

(ii) कई रेलवे के कर्मचारियों की गिरफ्तारी हुई।

(iii) मैं गाने की कसरत कर रहा हूँ।

(iv) वहाँ भारी-भरकम भीड़ जमा है।

(v) साहित्य और जीवन का घोर सम्बन्ध है।

(vi) पुलाव बहुत सुन्दर है।

(vii) यह काम आप पर निर्भर करता है।

(viii) उसके चाचा को लड़की हुई है।

4. प्रस्तुत अवतरण का उपयुक्त शीर्षक देते हुए संक्षेपण कीजिए। 5+10=15

मनुष्य उत्सवप्रिय होते हैं। उत्सवों का एकमात्र उद्देश्य आनन्द-प्राप्ति है। यह तो सभी जानते हैं कि मनुष्य अपनी आवश्यकता की पूर्ति के लिए आजीवन प्रयत्न करता रहता है। आवश्यकता की पूर्ति होने पर सभी को सुख होता है लेकिन उस सुख और उत्सव के इस आनन्द में बड़ा अन्तर है। आवश्यकता अभाव सूचित करती है, इससे यह प्रकट होता है कि हममें किसी बात की कमी है। मनुष्य का जीवन ही ऐसा है कि वह किसी भी अवस्था में यह अनुभव नहीं कर सकता है कि अब उसके लिए कोई आवश्यकता नहीं रह गई है। उत्सव में किसी बात की आवश्यकता का अनुभव नहीं करते, उस दिन अपने समस्त कार्य छोड़कर विशुद्ध आनन्द की प्राप्ति करते हैं, यह आनन्द जीवन का आनन्द है, कार्य का नहीं। (128 शब्द)

★ ★ ★